International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 2, February 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

हमीरपुर–महोबा क्षेत्र की संस्कृति एवं कला का ऐतिहासिक अध्ययन

[1] डॉ. आनन्द गोस्वामी
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग,
राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय, चरखारी, महोबा (उ0प्र0)

[2] यज्ञेश कुमार, शोधार्थी
इतिहास विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति देव संस्कृति है। समूची विश्व मानवता की अन्तःप्रेरणा को श्रेष्ठ दिशा में प्रेरित करने, सद्गुणों को भली प्रकार विकसित करने की क्षमता उसमें कूट–कूट कर भरी हुई है। जीवन पद्धति, कला–कौशल, ज्ञान–विज्ञान, सामाजिक, जीवन, उत्सव, पर्व–त्यौहारों आदि के सम्मिलित स्वरूप से ही किसी संस्कृति का बोध होता है। भारतीय संस्कृति तो एक निरन्तर विकासशील जीवन–पद्धति रही है। संस्कृति किसी भी समाज एवं उसके इतिहास का दर्पण है। मानव–समाज की पूर्व परम्पराएँ पूर्वजों के संस्कार, जिनमें प्राचीनता के साथ–साथ मान्यता प्राप्त नवीनताएँ भी शामिल होती हैं, संस्कृति कहलाती हैं। मानव के व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास एक समाज में होता है और उस समाज की संस्कृति ही उसकी उन्नति या अवनति का कारण होती है।

इसी श्रखलाबद्ध अध्ययन क्षेत्र हमीरपुर–महोबा, किसी एक क्षेत्र, एक जाति या एक धर्म की बात नहीं करता, बल्कि वह सम्पूर्ण जगत, सम्पूर्ण मानवता और यहाँ तक कि सम्पूर्ण प्राणिमात्र की

कल्याण कामना करता है। क्योंकि वह सर्वत्र जड़–चेतन में ईश्वर का वास मानकर सेवा, अहिंसा, दया, करूणा आदि उदात्त मानवीय गुणों पर ही जोर देता है। अध्ययन क्षेत्र की संस्कृति एवं कला तो एक निरन्तर विकासशील जीवन पद्धति रही है। इसमें जहाँ आनन्द–उल्लास का जीवन बिताने की छूट है वहीं दूसरी ओर जीवन के गम्भीर दर्शन से मनुष्य को महामानव बनाने का भी विधान है। यहाँ के प्राचीन ऋषि–मनीषी एक ओर जहाँ कला के साधक होते थे, वहीं दूसरी ओर जीवन और जगत् के सूक्ष्तम रहस्यों के उद्गाता–द्रष्टा भी होते थे। मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने की क्षमता से ओतप्रोत इस देव संस्कृति को विश्वसंस्कृति नाम इसी प्रकार दिया गया क्योंकि यह प्रकाश कभी भारत तक सीमित न रहकर सारी विश्व–वसुधा में फैला व सर्वजनीन बना। भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक दृष्टि में कला का लक्ष्य है पूर्ण का सृजन करना, यथार्थ की खोज करना।

संस्कृति क्या है–अब हम सर्वप्रथम 'संस्कृति' शब्द के अर्थ पर विचार करेंगे। 'संस्कृति' शब्द का अर्थ होता है–परिष्कृति, कच्ची अनगढ़ वस्तुओं को कुशलता पूर्वक सुधारकर उसका परिष्कार कर उन्हें सुगढ़ आकर्षक व उपयोगी बनाने की प्रक्रिया को 'संस्कृति' कहा जाता है। हम संस्कृति के सम्बन्ध में यही कहेंगे कि समस्त मानव समाज के विकास की व्यष्टिमय तथा समष्टिमय उपलब्धियाँ ही 'संस्कृति' है। संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से क्तिन् प्रत्यय लगाकर हुई हैं अतएव संस्कृति का शाब्दिक अर्थ है–उत्तम प्रकार से किया गया कार्य।

सामान्यतः समाज में रहने वाले शिष्ट मनुष्यों के सभी साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं कलात्मक विचारों और कार्यकलापों को संस्कृति के अन्तर्गत गिना जाता है। संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर अनेक व्यक्तियों द्वारा किया गया प्रयास है अर्थात् संस्कृति किसी देश के नागरिकों का शताब्दियों में किया गया कार्य परिणाम है।

संस्कृति एवं कला शब्द से पृथ्वी के किसी भी विशिष्ट भूखण्ड की मानसिक क्षमता एवं प्रगति का एक दीर्घकालीन इतिहास प्रगट होता है। सत्यं, शिवं, सुन्दरम की अभिलाषा एवं संरक्षण ही संस्कृति का प्राण तत्व ही मन और आत्मा की तृप्ति के लिए मनुष्य जो विकास या उन्नति करता है वह समग्र रूप से संस्कृति के अंतर्गत ही आता है।

''संस्कृति व कला वह जीवन पद्धति है। जिसकी स्थापना मानव व्यक्ति तथा समूह के रूप में करता है। वह उन अविष्कारों का संग्रह है जिनकी खोज मानव ने अपने जीवन को सही बनाने के लिए की है अपनी आत्मा और प्रकृति पर विजय पाकर ही व्यक्ति उन्नत हो सका है।

समाजशास्त्रियों, दर्शनशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों, काव्यकारों, शिक्षाविदों ने संस्कृति की अनेक परिभाषाएं दी हैं इनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं प्रस्तुत हैं– के.एम. मुन्शी के अनुसार हमारे रहन–सहन के पीछे जो हमारी मानसिक अवस्था, जो मानसिक प्रकृति है, जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत शुद्ध और पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है, वही संस्कृति है। संस्कृति जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण है।

डॉ. सम्पूर्णानन्द के अनुसार निरन्तर प्रगतिशील मानव–जीवन, प्रकृति और मानव–समाज के जिन–जिन असंख्य प्रभावों एवं संस्कारों से संस्कृत प्रभावित होता है। मानव का प्रत्येक विचार, प्रत्येक कृति संस्कृति नहीं है। पर जिन कामों से किसी देश–विशेष के समसत समाज पर कोई अमिट छाप पड़े, ही स्थायी प्रभाव ही संस्कृति हैं संस्कृति वह आधारशिला है, जिसके आश्रय से जाति, समाज व देश का विशाल भव्य प्रासाद निर्मित होता है। अध्ययन क्षेत्र हमीरपुर एवं महोबा का इतिहास संस्कृति एवं कला क्षेत्र में भारतीय इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ता हैं, यहां की ऐतिहासिक पृष्टभूमि साक्षी है कि भारतीय प्राचीनतम कला एवं संस्कृति का हमीरपुर–महोबा जिम्मेदारीपूर्ण निर्धारण किया है।

अध्ययन क्षेत्र

बुन्देलखण्ड भारत के मध्य में स्थित एक प्रमुख भाग है जो दो राज्यों उत्तर–प्रदेश एवं मध्य प्रदेश तक विस्तृत है। मध्य प्रदेश के प्रमुख जनपदों में सागर, दमोह, टीकमगढ़, पन्ना, छतरपुर तथा दतिया शामिल है, जबकि उ.प्र. में प्रमुख रूप से झांसी जालौन, ललितपुर, बांदा, चित्रकूट, जमीरपुर, तथा महोबा शामिल है। इसकी स्थापना 20 अक्टूबर 1998 को हुई। इसका क्षेत्रफल क्षेत्रफल 14756 वर्ग कि0मी0 है। बुन्देलखण्ड उत्तरी अक्षांश 23^0–24^0 अंश तथा 26^0–50^0 अंश और पूर्वी देशान्तर 77^0–52^0 अंश तथा 82^0 अंश के मध्य उन्नतोदर सम चतुर्भुज के रूप में स्थित है। इसके उत्तर में यमुना नदी तथा उत्तर पश्चिम में चम्बल नदी इसकी सीमा का निर्माण करती है।

वर्तमान में हमीरपुर–महोबा दो अलग जनपद हैं लेकिन फरवरी 1994 से पहले महोबा, हमीरपुर की तहसील हुआ करता था। फरवरी 1995 के बाद महोबा को एक नया जनपद बनाया गया। वर्तमान में हमीरपुर जनपद का क्षेत्रफल 4121.9 किलोमीटर^2 तथा महोबा जनपद का क्षेत्रफल 2884 किलोमीटर^2 है। हमीरपुर जनपद महोबा सहित 25^{0}07′उत्तर और 26^{0}07 उत्तर अक्षांशों के मध्य तथा 79^{0}17′ पूर्व और 80^{0}21′ पूर्व देशान्तरों के मध्य स्थित है। बुन्देलखण्ड में चदेंलो का शासन रहा है जिन्होनें यहाँ पर कई प्रकार के विकास कार्यो को प्रमुखता दी। चदेंलो के द्वारा कला और स्थापत्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए गए जिसमें खजुराहो, महोबा, कालिजंर के मंदिर प्रमुख रूप से शामिल हैं, जो नागर शैली के उदाहरण हैं।

नौवीं शताब्दी ईस्वी से हमीरपुर में चंदेलों का शासन रहा तब यह भुक्ति राज्य के अन्तर्गत आता था लेकिन ग्यारहवी शाताब्दी ई. में यहाँ एक कल्चुरि राजपूत ''हमीर देव' का शासन स्थापित हुआ, जो अलवर से यहाँ आया था। इसी हमीर देव के नाम पर इस स्थान का नाम हमीरपुर पड़ा। हमीरपुर नगर सुरक्षा की दृष्टि से दो नदियों बेतवा व यमुना नदी के मध्य बसाया गया था। ये दोनों नदियाँ शहर को दोनों ओर से घेरे हुए है। किन्तु नदियों में पुल न होने से आक्रमण कारियों से तो हमीरपुर सरक्षित था किन्तु आवागमन की दृष्टि से हमीरपुर पहुँचना कठिन था किन्तु वर्तमान समय में दोनों नदियों पर सेतु निर्माण से नगर एवं जनपद के विकास के मार्ग प्रशस्त हुये हैं। यहाँ के कई मंदिर किले प्रसिद्व है। किले में स्थित हाथी दरवाजे का स्थापत्य देखने लायक है।

महोबा एक ऐतिहासिक नगर है, यह नगर आल्हा ऊदल एवं पान उत्पादन के लिए प्रसिद्व है। महाभारत काल में यह नगर महाबली के नाम से प्रसिद्व था। सन् 740 से 830 ई0 तक का काल चन्देलों के उदय का समय था। चन्देल वंश के आदि पुरूष चन्द्र वर्मन ने एक महोत्सव किया था, तभी से इसका नाम महोत्सव नगर पड़ा जो कालान्तर में महोबा कहलाया गया। इसे त्योहारों का शहर कहा जाता है। महोबा लगभग 400 वर्षो तक चन्देलों की राजधानी रहा था। इसका खजुराहो के नजदीक होना इसकी प्रसिद्धि को और बढ़ा देता है। चदेंलो के पहले यहाँ गहरवार ओर प्रतिहार राजपूतों का शासन था। (1) चदेंलों की राजधानी होने की वजह से यहाँ अत्यधिक मात्रा में विकास कार्य किये गए। चन्देल शासन कला प्रेमी थे, इसका प्रमाण महोबा,

खजुराहो, चरखारी तथा कालिंजर के मंदिरों से मिलता है। चदेंलो की खास बात यह रही कि इन्होनें सभी धमों को प्रश्रय दिया जैसे– खजुराहो में हिन्दू तथा जैन मंदिर एक साथ मिलते है।

प्रस्तुत अध्ययन में हमीरपुर –महोबा जनपदों की कला व संस्कृति का समावेश करता है। शोधार्थी ने यहाँ की स्थापत्य तथा मुर्तिकला के अलावा अन्य कलाओं पर शोध करने पूर्ण प्रयास किया है। इस क्षेत्र में बहुत कम मात्रा में शोध कार्य हुए है, जिससे ये क्षेत्र इतिहास की मुख्या धारा से पिछड़ गये हैं। शोधार्थी द्वारा प्रमुख स्थलों को उजागर कर इसे क्षेत्र के महत्व को रेखांकित करना तथा विकास की मुख्य धारा से जोड़ना तथा संस्कृति एवं कला के संरक्षण पर प्रकाश डाला है।

उद्देश्य

शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. हमीरपुर–महोबा की संस्कृति व कला के विकास एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र की संस्कृति व कला पर किन–किन धर्मो का प्रभाव रहा इसका अध्ययन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र की कलाओं का अन्य कलाओं से सम्बन्ध या तुलना का अध्ययन करना।
4. हमीरपुर–महोबा अन्तर्गत संस्कृति के विविध आयामों का अध्ययन करके उसको प्रस्तुत करना।
5. तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं कला में विभिन्न ऐतिहासिक कालों में स्थितियों का आकलन करना।

साहित्यिक पुनरावलोकन

डॉ॰ रीता प्रताप, 'भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास' (2010) ने अपनी कृति में बताया कि सिन्धुघाटी सभ्यता की कलात्मक सामग्री हमें उन वस्तुओं के रूप में उपलब्ध है, जो मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, नाल, झूकर, चन्हूदड़ो आदि स्थानों में खुदाई से प्राप्त हुए हैं। इन स्थानों में चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्य के जो अवशेष मिले हैं, उनसे उस युग की महान

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

कला का परिचय मिलता है। दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले बर्तनों पर अलंकृत चित्रकारी को देखकर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय चित्रकला संस्कृति कितनी अधिक समुन्त थी और उसका कितना व्यापक प्रसार था। इन कलावशेषों को देखकर पता चलता है कि मानव हृदय की चेष्टाओं और प्रवृत्तियों का प्रकटीकरण कला के ही माध्यम से सम्भव है।

डॉ॰ गिर्राज किशोर अग्रवाल, **(1999)** ने अपनी कृति **'कला और कलम'** में स्थापत्य कला का ऐतिहासिक स्वरूप ऐलोरा का वास्तुशिल्प कैलाश मंन्दिर अथवा रंगनाथ के नाम से प्रसिद्ध है, का वर्णन किया है एवं यह चालुक्य शैली की चैत्य मन्दिरों तथा महाबलिपुरम् के पल्लव नरेशों के समय बने रथों के समान है। और इसे मूर्ति–निर्माण शैली में बाहर और भीतर से उत्कीर्ण किया गया है। ऐलोरा के वास्तु पर परम्परा से चले आ रहे चैत्यों की पद्धति के अतिरिक्त दक्षिण में विकसित हो रहे चिनाई किये हुए मुक्त वास्तु का भी प्रयोग है; जिसके उदाहरण दक्षिण का कैलास मन्दिर (काँची) तथा पट्टडकल का विरूपाक्ष मन्दिर है।

डॉ॰ रीता प्रताप, 2010, ने अपनी पुस्तक भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास में कला को सर्वोत्कृष्ट उदाहरण चन्देल शासकों के समय निर्मित खजुराहो के मन्दिर में वर्णित किया हैं। ये मध्यप्रदेश के छतरपुर जनपद में हैं। ये शैव, वैष्णव तथा जैन सम्प्रदायों के हैं परन्तु इनकी रचना शैली में कोई अन्तर नहीं है। शैव समूह में कण्दरिया महादेव मन्दिर, वैष्णव समूह में रामचन्द्र (चतुर्भुज) मन्दिर तथा जैन समूह में जिननाथ (पार्श्वनाथ) मन्दिर सबसे बड़े हैं परन्तु ये भी परस्पर बहुत मिलते–जुलते हैं। दो मन्दिर पूर्णतः भिन्न शैली के हैं। ये हैं चौसठ योगिनी मन्दिर तथा घण्टई मन्दिर। कहा जाता है कि यहाँ लगभग 80–85 मन्दिर थे; जिनमें से अब अच्छी–बुरी दशाओं में केवल 30 मन्दिर ही शेष हैं।

'लिटन' नामक प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान ने संस्कृति को सामाजिक विरासत कहा है। 'सभ्यता' किसी 'संस्कृति' की चरमावस्था होती है। हर संस्कृति की अपनी सभ्यता होती है। सभ्यता संस्कृति की पूरक है। सभ्यता के किसी संस्कृति की बाहरी चरम कृत्रिम अवस्था का बोध होता है। संस्कृति सहज विस्तार है, तो सभ्यता कठोर स्थिरता। संस्कृति मनुष्य का समस्त सीखा हुआ व्यवहार है। हमारे प्रतिदिन की छोटी–मोटी बातें, खाना–पीना, पहनना– ओढ़ना, चलना–फिरना, हिलना–मिलना, बात–बर्ताव, हाट–बाट, घर–द्वार, झाड़–बुहार, साज–सँवार,

सेवा–सत्कार इन्हीं की संस्कारिता में 'संस्कृति' मूल है। संस्कृति का साक्ष्य है मानव के लिये सुख, आनन्द और शान्ति की स्थापना। इस साक्ष्य के साधन हैं, अन्तःकरण तथा वाह्यकरण द्वारा प्रस्तुत श्रेष्ठ कार्य, जिसके अन्तर्गत मानव के सभी निमार्ण कार्य आ जाते हैं। जैसे साहित्य, कला, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, धर्म, आचारादि। संस्कृति अतिपवित्र वस्तु मानी गयी है, क्योंकि इसका वास्तविक लक्ष्य लोकशुद्धि है।

शर्मा, रामसत्य 'मध्यकालीन भारत की कला एवं संस्कृति' (1996) ने अपनी कृति में भारतीय कला को प्राकार और कंठवारिणी के ऊपर माला में गुंथी हुई मोतियों के समान पंक्तिबद्ध रूप में कपिशीर्षकों का अलंकरण दुर्ग की शोभा में अभूतपूर्व वृद्धि करता है, साथ ही शत्रु द्वारा आक्रमण करने पर यह कपिशीर्षक (कंगूरे) अस्त्र–शस्त्रों से सैनिकों की रक्षा करने में समर्थ होते हैं के स्वरूप में दिखाया। साथ ही बताया कि भारतीय दुर्गों में इसकी रचना गोल मेहराबदार तथा तोड़ेदार दोनों ही रूपों में मिलती हैं। मेसोपोटामिया, ईरान और भारत की प्राचीन कला में यह लोकप्रिय था। भरहुत, सांची, मथुरा, बोधगया और गान्धार के उच्चित्रों में भी इसका अंकन हुआ हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हमीरपुर–महोबा क्षेत्र में संस्कृति एवं कला का उच्च स्तर सदैव से ही रहा है। अध्ययन क्षेत्र अन्तर्गत संगीत के अतिरिक्त अभिनय कला का विकास भी चन्देल युग में हुआ। इस युग का सुप्रसिद्व नाटक ''प्रबोध चन्द्रोदय' कीर्तिवर्मन के राजभवन में अभिनीत हुआ। इसका निर्देशन सामन्त गोपाल ने किया था। अभिनय में वस्त्राभारण, रंग व्यवस्था, संगीत–व्यवस्था का वैज्ञानिक विकास हो चुका था तथा अभिनय के बीच नाट्य, न्त्य की योजना रहती थी। राजभवन की रंगशाला के अतिरिक्त अन्य रंग शालाएँ भी थीं। जहाँ न्त्य और संगीत के कार्यक्रम प्राथमिक रूप से हुआ करते थे।

यहाँ शास्त्रीय और लोक संगीत दोनों ही प्रचलित थे। यह लोग संगीत जातीय–व्यवस्था, तीज–त्यौहार और धर्म से सम्बन्धित था। समय–समय पर इनके प्रदर्शन होते थे। महोबा और

हमीरपुर जनपद में शास्त्रीय संगीत बहुत अधिक प्रसिद्व था। यहां पर नृत्य की अनेक विधियाँ प्रचलित थी। इनमें लोक–नृत्य और शास्त्रीय नृत्य दोनों ही शामिल थे। इस समय न्त्यकार स्वतः गीत गाते थे और उनके साथ वादन वाद्य बजाते थे। कही–कही न्त्यकार तलवार की ढाल पर काँच के टुकड़ों पर जलाशय में, तथा रस्सी के ऊपर न्त्य करते थे। ये न्त्य सार्वजनिक स्थलों और राजदरबारों, धर्म स्थलों पर होते थे। वस्तुतः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य आधार पर यह सिद्व माना जा सकता है कि हमीरपुर–महोबा जनपद कला एवं संस्कृति प्रिय क्षेत्र रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव, डॉ. रूदल प्रसाद, भारतीय कला, विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी, संस्करण, 2008, पृ. 67–68
2. कृष्ण जुगनू, वास्तुशास्त्रोपदेष्टा मयमूनि विरचिंत सचित्र मयमतम् खण्ड 2 पृष्ठ 17
3. महेशचन्द्र जोशी, युग–युगीन भारतीय कला पृष्ठ 212
4. महेन्द्र वर्मा, श्यामशरण उपाध्याय, भारतीय कला का इतिहास पृष्ठ संख्या 98
5. शिवस्वरूप सहाय, भारतीय कला, पृष्ठ संख्या 168
6. त्रिवेदी एस.डी. (1983) स्कल्पचर इन द झाँसी म्यूजियम, द गवर्नमेन्ट म्यूजियम, झाँसी, उत्तर प्रदेश पृष्ठ संख्या 90–91
7. हमीरपुर महोत्सव स्मारिका 94 पृष्ठ संख्या –64।
8. हमीरपुर जपद का आदर्श भूगोल पृष्ठ संख्या 16।
9. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग 22 पृष्ठ 158।
10. पाण्डेय, अयोध्या प्रसाद, (1968), चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग पृष्ठ संख्या 225
11. पाण्डेय, अयोध्या प्रसाद, उपरोक्त पृष्ठ संख्या –226
12. पूर्वोद्धृत, पृ. 117
13. प्रताप, डॉ. रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, संस्करण, 2009, पृ. 522

14. राज्य संग्रहालय, लखनऊ में किये गए स्वअध्ययन एवं छायांकन से प्राप्त

15. राज्य संग्रहालय, लखनऊ में किये गए स्वअध्ययन एवं छायांकन से प्राप्त 01.02.2015

16. शर्मा, डॉ. श्याम, प्राचीन भारतीय कला, वास्तु कला एवं मूर्तिकला, रिसर्च पब्लिकेशंस : जयपुर, एन.डी., पृ. 115

17. डॉ. अयोध्या प्रसाद पाण्डेय : चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास पृष्ठ संख्या 241।

18. डॉ0 एस0डी0 त्रिवेदी, ''बुन्देलखण्ड का पुरातत्व'' राजकीय संग्रहालय झाँसी, 1984 पृष्ठ संख्या 44

19. चौरसिया, वासुदेव (1994), चन्देलकालीन महोबा और जनपद हमीरपुर महोबा के पुरावशेष, प्रेम बुक डिपो, महोबा पृष्ठ संख्या 88

20. चौरसिया, वासुदेव, उपरोक्त

21. जय नारायण पाण्डेय, भारतीय कला पृष्ठ संख्या 181

22. जुगनूं, डॉ. श्रीकृष्ण, शर्मा, प्रो. भैंवर, समरांगणसूत्रधार, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस : वाराणसी, भाग–2, संस्करण, 2011, पृ. 348

23. अग्रवाल, वासुदेवशरण, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन : वाराणसी, षष्टम् संस्करण, 2010, पृ. 3

24. गैरोला, वाचस्पति, भारतीय संस्कृति और कला, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थानः लखनऊ, तृतीय संस्करण, 2006, पृ. 484